

गङ्गा

मैथिली क सर्वोत्तम मासिक



एक प्रति

द्वारि

आना

सङ् १६५७

पत्रोस नवका पैसा

२५ नवका पैसा

[बिहार सरकार द्वारा श्रृल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'श्री सुधांशु 'शेखर'
चौधरीप्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति २५

विशेषांक ५०

वार्षिक ३)

आजीवन ५१)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

द्वारा दरभंगा प्रेस

कम्पनी (प्रा०) लि०

दरभंगामे मुद्रित

एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान

वैदेही समिति,

लालबाग, दरभंगा

सूची

कथा-पिहानी

हरिद्वार-वास

कुसुम : एक परित्यक्ता

जोतखी कका

सतवा

श्रीराजकमल १७३

श्रीएस०शरण १८६

श्रीबलराम १८५

श्रीमहावीर १८८

लेख

यत्र-तत्र-सर्वत्र

मा एतवे

यात्रो १६५

श्रीवेदमित्रमिश्र १७२

कविता

अग्रहन

प्रकृतिक विवेचन

भगवान श्री विज्ञान

शिशिरक प्रभात

श्रीरामसेवकठाकुर १६३

श्रीशरणजी १६४

श्रीराजमोहनभा १६४

श्रीहरेकान्तभा १६७

बाल-मण्डल

डाक-पीन

श्रीभा

श्रीअग्रदूत १६५

श्रीकालीनाथभा १६६

स्तम्भ

पाठकक पृष्ठ

१६७

मुख-चित्र : मैथिली - साहित्यक हेतु आचार्यश्रीरामलोचनशरण (पुस्तक-भण्डार, पटना) गौरव थिकाह । एहू वृद्धावस्थामे तुलसीदासक 'रामचरितमानस' क मैथिलीमे अनुवाद समाप्त कैलन्हि अछि आर से प्रेसमे छपि रहल अछि ।

आवश्यक निवेदन

(१) गत फरवरी मासमे बृहत् कथा - विशेषांक प्रकाशित भै गेल छल एवं जे १६५६ क ३) चन्दा जे कार्यालयमे पठाँने छथि तनिके प्रति सभ पोस्टल सर्टिफिकेट द्वारा पठाँल गेलन्हि । यदि १६५६ क ग्राहक सभकेँ विशेषांक नहि प्राप्त होइन्ह, तँ कृपया कार्यालयकेँ सूचित कैल जाय ।

(२) ई कथा-विशेषांक १६५६ मे प्रकाशित हेबाक चाही किन्तु सम्मेलनक अधिवेशनक कारणेँ बिलम्बसँ प्रेषित कैल गेल । एहि कथा-विशेषांकमे सम्पूर्ण ११० पृष्ठ अछि यद्यपि १९५५ मे १०० पृष्ठक विशेषांक छपल छल । नियमानुसार पाठकक सेवामे साल भरिमे एहिसँ बड़ कम पृष्ठ प्रेषित हेबाक चाही तथापि एहि विचारेँ जे मैथिली-साहित्य दिशि लोकक विशेष अभिरुचि बढ़ै एतेक खर्चा विशेष कैल गेल अछि ।

(३) ई परम दुःखक विषय अछि जे गत कैरु वर्षक चन्दा ग्राहक सभ लग बाँकी अछि से शीघ्र पठैबाक कष्ट कैल जाय । कागत, छपाइ एवं संचालनमे टाका प्रतिमास खर्च होइत । प्रेसक टाका, कार्यालयक कार्यकर्ता सबहिक दरमाहा कतेको मासक दातव्य अछि । बड़ कृपा हेत जे अपन बकिओता चन्दा पठैबाक कष्ट करी । मासमे १) मात्र हमर भित्ता थिक—वार्षिक ३) टाका मात्र ई चन्दा वेसी तँ नहि बुझना चाही । समिति दिसिसँ कोनो त्रुटि आदि हो से कृपया ओकरा हेतु विचारादि लिखी, अप्रसन्न नहि होइ ।

(४) सम्मेलन मध्य जे ५) टाका दै सदस्य बनल छथि तनिका मइ १६५७ सँ 'वैदेही' पठौल जा रहल छन्हि । एहिसँ पूर्व सम्मेलनक आय-व्यय निरीक्षण (Audit) क हेतु 'वैदेही' नहि जा सकलन्हि ताहि हेतु क्षमा-प्रार्थी छी । कतेको गोटेक पूर्ण पता कार्यालयमे नहि प्राप्त भेलासँ हुनक प्रति सभ कार्यालय मे पड़ल छन्हि से पूर्ण पता एवं ५) टाकाक रसीद संख्याक उल्लेख करैत सूचना देथि ।

(५) लेखकगएसँ अनुरोध अछि जे अपन रचना पठवैत काल रचनापर पूर्ण पता लिखि पठौल करथि जाहिसँ प्रकाशनोत्तर समयपर लेखकक प्रति पठौल जा सकन्हि ।

(६) 'वैदेही'क १६५७ क अग्रिम चन्दा पठावै काल मनीआर्डर कूपनपर स्पष्ट लिखल जाय जे '१६५७ क चन्दा जा रहल अछि ।' ग्राहक संख्या-पैकेटक लेबुलपर जे लिखल रहैछ तकर उल्लेख अवश्य कैल जाय ।

(७) परम खेद अछि जे सम्मेलनक आय-व्यय निरीक्षणक कारणेँ सम्मेलनमे ५) वला सदस्य 'वैदेही'क प्रति सभ पूर्वये नहि गेलन्हि । आव एहि मइ मास (१६५७)सँ आरम्भ भै अग्रिम अप्रैल १६५८ धरि निःशुक्त 'वैदेही' पठौल जैतन्हि । एहन सदस्य लोकनि कृपया अपन पूर्ण पता कार्यालयमे शीघ्र प्रेषित करथि ।

—मंत्री, वैदेही समिति, दरभंगा

यत्र-तत्र-सर्वत्र !!

यात्रीजीक इच्छा छन्हि जे 'वैदेही' मे प्रति मास एहि प्रकारक टिप्पणी लिखि पठाथी, तकर हमरा सभ हार्दिक स्वागत करै छी । आशा अछि पाठकगणकेँ सेहो ई नवीन स्तम्भ प्रिय लगतन्हि ।

साहित्य अकाडमीक अधिकारी लोकनि मैथिलीक सम्बन्धमे एम्हर वेश उत्सुक भ गेल छथि । सङ्घि राजस्थानी ओ सिंधी भाखा दिश सेहो ओतवे तत्परता-पूर्वक जिज्ञासा छइन्ह । हमरा विश्वस्त सूत्रें ज्ञात भेल अछि जे डॉ० श्रीसुनीति कुमारचटर्जीकेँ अकाडमीक मंत्री मैथिलीक मान्यता लए पुछने छथीन्ह ।

(आइ. १२ मार्च थोक, १६ मार्चकेँ एतद्विषयक मीटिंग थिकइ).....एहि चीनू भाषाक ओ साहित्यक एकहकटा इतिहास तइआर करबाकँ अकाडमी तकरा फेर प्रमुख भारतीय भाखा सभहिमेँ अनूदित करा लेत । ई काज आगामी छओ मासक भितरे हेबालए छइ । ई भारी शुभ लक्षण थीक हमरा लोकनिक लेल ।

मैथिली साहित्य परिषद् एवं वैदेही-समितिकेँ आव एहि दिश अधिकाधिक सचेष्ट हेबाक चहियइक-मैथिलीक प्रकाशित ग्रन्थ सभहिक एकटा प्रामाणिक सूचीपत्र समिति वा परिषदक दिशसँ तइआर होइक, से शीघ्रसँ शीघ्र । पारस्परिक मनोमालिन्य छाड़ि, साहित्यिक उपलब्धिक एकटा निष्पक्ष लेखा-जोखा हमरा लोकनिकेँ समग्र भारतक समक्ष उपस्थित करक हैत । ई काज आव अनिवार्य ।

साहित्य अकाडमी 'विद्यापति-पदावली'क अनुवाद मराठी-गुजराती आदि भाखा सभहिमे करबा रहल अछि—श्रीबेनोपुरी द्वारा संकलित ओ पुस्तक-भंडार द्वारा प्रकाशित विद्यापतिक पदावलीक अनुवाद । विद्यापतिक भाव-माधुर्य आव सँउसे भारतकेँ सुलभ भ जेतइ, ई जानि मिथिलाक व्यक्ति-व्यक्ति केँ प्रसन्नता हैत ।

एडिठाम (दिल्ली ओ नई दिल्ली मध्य) मैथिली वजनिहार संख्यामे बढ़ कम । ताकि-हेरिक डेढ़-दू सए गोटे होइ वा नहि तहूमे संदेहे ! साडेव-श्रीमंतमे श्रीचंद्रशेखरम्मा I.C.S., ओ श्रीलक्ष्मीकांतम्मा I.C.S., पाँच-सात गोटे आओरो आफिसर होथि त होथि । दू-तीन टा पत्रकार से छथि । पचास-चौस गोटे अनुष्ठानी, अध्यापक एवं किरानी सेहो ततवे । तीनि-चारि गोटे मिलिटरीमे छथि । कारखाना, बाजार, प्रेस ओ आफिस समहिमे कम दरमहाबला काज केनिहार से कतेको...गोटेक दिन आव अहू पाछाँ लागी त पूरा-पूरा पता लागि सकइए । ओना दरमंगा हाउस (मानसिंह रोड) कउखन-कउखन जाइ छी त रतिकान्त बाबूसँ एतुका मैथिल-मंडलीक हाल-सुरति बात होइत रहइए ।

अइ ठाम ओन्हकरा अपना लोकनिक लेल दूटा गोल अछि—(१) विहारी एसोसिएशन, आ (२) विहार प्रवासी संगम । पहिलुका पुरान, दोसर नव । दूनूमे बेश गोलइसी, बेश मनोमालिन्य । एसोसिएशनक हाथमे टाका-कड़ई सेहो पुष्ट आ.....क तीन सरकार-पाँच सरकारक कृपाकटाक्षो एकाधिकार सेहो ओकरे हासिल छइ । पार्लियामेन्टक विहारी मेम्बरान सेहो अविकांशतः ओइपर दयालु । जातीय संकीर्णताक विहारी प्रसाद सेहो बेशी ओकरे परि लगइ छइ ! 'प्रवासी संगम' हेवनिएमे स्थापित भेल अछि । एकर सदस्य लोकनि अपेक्षाकृत उदार आ सचेष्ट सेहो बेश ।

ओइ खेप सहर्षा-बिल्लाक किराइ बाबू (श्रीकिराइमुसहर) पार्लियामेन्टक मेम्बर रहथि, देखा चाही अहू खेप घुरि केँ ओ दिल्ली अवइ छथि की नहि ! अइ खेप जँ घुरलाह त हमरा नेवार अछि जे समय त क एकटा 'इन्टर्भ्यू' लेबइन आ से 'बइदेही'क पाठक लोकनिकेँ सुलभ होइन तर चेशा करव । M. P. भक किराइ बाबू फेर घूरि त आवथु कने...

नई दिल्लीक कोनो एक पोलिंग-बूथ पर ओइ दिन एकटा बड़का लीला भ गेल !

दामी कारसँ तीन गोटे आधुनिका उतरलोह आ पार्टी-कैम्पमे अपन-अपन कमसंख्या बूझि-सूझि लेलइन, तत्पश्चात् मत-पत्र लेबाक हेतु पोलिंग आफिसर दिश आगू बढ़इत गेलीह । देखलथीन जे तर्जनीमूलमे करिया निशान लगा-लगाकेँ पोलिंग आफिसर बैलट पेपर दइ छइदाइ लोकनिक परिमार्जित रुचिबोध विद्रोहक देलरइन — सूः, एतेक सुंदर हाथकेँ दागी बना देत ! जो नइ देबउ ककरो भोट...घूरि अबइत गेली दाइ ! लोकनि !!

तखन एक गोटे देर धरि गुनगुनाइत रहलाह, आ से पदावती इमरा कहियो नहि बिसरत !

तीन वोट रह गए
फैशन के नाम पर !
जयति नख-रंजनी !
जयति दृग-अंजनी !
भक्त भ्रम-भंजनी !
नवयुग-निरंजनी !
फैशनके नामपर तीन वोट रह गए...
रह गए, रह गए, रह गए S S S S S]
जयति नख-रंजनी १११११.....

शिशिरक प्रभात

श्रीहरेकान्तभा

शिशिरक प्रभात अछि, लोट - पोट

तुहिनक :श्वेत - स्वस्ति - बूंद

सुधर चिर चीरक - लपेट

दुवाँदल - पट बैसि - चेति

हरितमां नवायु नवल - भेंट

वालारुण सुषमां निरखि हेतु

पूर्वा - तट पर रवि कएल भेंट ॥

समय - समय खन साँस लेथि ॥

सतवा

बाटाक 'एम्बैस्डर' मे कमीज - पतलून पर सगर्व आँखि फेरैत
आफिस दिस विदा होइत छी की अकस्मात डेराक फाटक पर
एकटा घिनौन आकृति आबि ठाढ़ भेल । केस बेस पैघ-पैघ आ
सेहो एकदम ठाढ़ । गुदरी-चेथड़ीक अनावश्यक भार उठौने एकदम
मैल काटि आ अङ्ग-अङ्ग दुर्गन्धाभिषिक्त । हाथमे एकटा फूटल
बोतल अधगेंद नेने ।

हम नाक पर रुमाल राखि कतिआक बढ़ि गेलहुँ ओ पछोड़ धए-
लक । एक ठाम एकान्त पाबि हमरा दिस किछु संकेतो कैलक ।
आहि रौ बा, ई त सतवा थीक, सतवा.....

'सब माल साढ़े छः आना.....' पास-पड़ोसक लोकसबहिक ध्यान अपना दिस
आकर्षित करैत; अपना परिसरक पूर्ण तेजी सँ ठेला-ठेलैत बढ़ल जा रहल छल
ओ दुनू ओहि पजरैत बैशाखक दोपहरिमे । दुनू गोटे छल घामसँ तर-बतर ।
हाथ-हाथ भरि जी काढ़ैत । घाम आ गर्मीसँ अपस्याँत । कोलतार सपोताल
सड़क नवजात शिशुक कोमल माथजकाँ पल-पल कऽ रहल छल आ हम
छलहुँ की निर्दयतापूर्वक ओकरा खुनैत अपना धुनिए बढ़ल जा रहल छलहुँ ।
जानि ने किएक एहि फेरीवलाक गीत आइ हमरा बड़ आकर्षित कैलक ।
ठिठकि रहलहुँ । तारतम्य बैसाओल त स्वर किछु-किछु परिचित सन बुझैल ।
तावत देखैत छी त ओहिमेसँ एक व्यक्ति अस्त-व्यस्ते माथ उठौने हमरे दिस
कनियाक देखबाक उपक्रम करैत छल ।

अब, ई त सतवा थीक.....

सतवा !.....

कतेक दिनका बाद—एहि बीचकाल-चक्र हमरा मानस-पथपर अपन कतेक
लीख बनाए - मेटाए खिसकि गेल छल—आइ सतवाक चिर-बिछुड़ल आकृति
हठात् हमरा भ्रुक भोरि रहल अछि । बाल्यावस्थाक चिर-विस्मृत सङ्गी सतवाक
आ अप्पन सेहो एक-एक स्मरणीय चित्र, हँ कतेक त अपन अस्तित्व कहिया ने
हटौलक, आँखिक सामने त नहि मुदा भीतर धरि अवस्से छल । एक पर एक
ततेक द्रुतगामी जेना कोनो अदृश्य ओपरेटर द्वारा हड़बड़ीमे सञ्चालित
प्रोजेक्टर जखन की रीलमे कोनो व्यवधान उपस्थित होइछ ।

बाढ़िएक सङ्ग हमरा गामक कपार सटल अछि । जीबछ चौरक पछिमे सरकैत चलैत अछि सालोभरि काते-कात । बाबा कहैत छलाह जे चौरमे पहिने सोन उपजैक जखन 'भरथाहा' क बान्ह सही छलैक । आब ओकर ध्वंसक प्रतीक अछि गाम भरि ई आर्थिक विध्वंस । घरक दाँत निपो-डल कोरो सौँ सहजहि घरवारीक आर्थिक दशाक अनुमान भय जाइछ । जीबछधार हमरा लोकनिक मातृ-वत् पालन करैत आयल अछि । हमर माटि, हमर काया ओकरे प्रसादसँ बनल अछि, फूलल-फड़ल अछि । स्यात् एही कारण हमरा लोकनि चढ़िते अपाढ़ धारक स्वागत करैत जोरसँ टाहि दैत छिएक —

कमला मैया पुरुबो ने गे ।

हमरालोकनि बढ़िक खेलयबा योग्य भेलहुँ नहि की बाढ़ि आयल । आने साल जकाँ उच्छृंखल, उदाम । कोनो कूल-किनारक प्रतिबन्ध नहिए । मौजमे उफनैत धार, रस्ता-पेराक बाधा सबकेँ गर्दा-गर्दा बनबैत, भसियबैत ।

हमरोलोकनिक बाल सुलभ चञ्चलताकेँ बल भेटय आ संगे मौज मनयबाक उन्मुक्त आमंत्रण ।

फेर त, चारू कात चहल-पहल । अपन-अपन दापा, टहुका आ डाबा लऽ बहरायल नेना-भुटकासँ बूढ़-बूढ़ व्यक्ति सब सेहो । चतुर्दिक यौवनक बाढ़ि—मूर्त्त उत्साह, उमंग, मौज । किओ कबइ पर हाथ सुतारैत अछि त केओ बाहामे 'बह्वर्जीव विच माया'क अन्वेषण करब जकाँ पोठी बिछबामे दत्तचित्त । काँकोड़ दिस आइ ककरा ताकक फुरसति छैक । आई त केवल कबइ, बोआरक पुछारी छैक । टेङ्गरा-पोठी चालि दैत रहि जैत । भाग जगतैक त सौराठी, बोआरी भुन्ना आ रोहू.....।

हमरो लोकनि खन मोनमे आबय त बेगे सङ्गे भसिया जाइ आ खन ऊँचका भीड़पर स धमाक दऽ जीबछक बीचमे कूदबाक प्रतियोगिता करी । मुदा सबसँ टपि जाए सतबे । सतबात एहि सब फनमे उस्तादे छल । केहेन कौशलसँ नाह खेबय, कतबो ने तेज धार रहौक । जी-जानक त ओकरा कोनो परवाहिए नहि छैक आ ने रहलैक । दाबी एतेक धरि जे गोहिक लग दऽ नहि डुब्बी काटिक निकलि जाइ त मर्दक बच्चा नाहि ।

मुदा अरना नानीक डाक कानमे पड़लैक नइ कि सतवा इएह लय ओएह लय पार । डॉरक धरिया मोहारे पर पसरल रहैक हॉइ-हॉइ लपटविते जानि ने सतवा कोनो ने कोनो तरहे लापता भइर टा जाय । कोना ओ लुत्ती भ जाइ से देखि हमरो लोकनि स्तंभित भए जाइ ।

ओकर नानी.....!

ओएह डनिआ बुढ़िया.....!

बाप रे बाप—ई कहि अकस्मात् ओहि दिन दाइ थर-थर काँपऽ लागल । माय-केँ बुझबऽ लगलैक जे ओ केहेन हकलि डाइन अछि । ‘अगिन बान’ स लऽ कऽ ‘गाछ हँकबा धरि’ जतेक प्रचलित आ तथा कथित डाइनक कौशल छैक गना गेलैक । मायक कोंढ़ सेहो उनटय:- पुनटय लगलैक ।

तु की सरिपहुँ ओ हकलि डाइन अछि । हम ओकरा आँखि—जकर कुट्टि कतेको गोटाक आशा-रश्मिक सर्वनाशे कै देने छलन्हि—मे कतेक अथाह, गहोँर वेदना, सागरक गंभीर व्यक्तित्व नेने नुका-नुकाक देखबाक कतेको अवसर भेल अछि । सब बेर ओहि नयनक मूक किन्तु सजल भाषाक अर्थ स्पष्ट नहिए टा भेल ।

सतवाक वाप जखन सत्तो साले भरिक छल ओकरा छोड़िक सब दिनुका हेतु चल गेलैक आ माए तीन सालक बाद हैजाक शिकार । तबनेसँ मातृ—पतृ—विहीन सतवा नानीएक कोरामे साँभे जे सुटकिक ठर पाड़ए लगैत अछि से की बुढ़बुढ़ानुस सब ठर पाड़ैत होयताह ।

सतवा नम्मरी अगती छल । मशग खुरलुचवी । हमरा सवहिक पार्टी लीडर; सदिखन अगुआ आगिमे की पानिमे ।

साँभमे मास्टर साहेबक विदाइक छाँकी पीठ परका गर्दी भाड़लक नइ की बस्ताकाँ खेतर नेने पेटकेँ एक हाथसँ पकड़ने हम सब सतवा सङ्गे लछमिनिया दिस लंका ल पड़ाइ । मुदा पहुँचय धरि सबसँ पहिने सतबे । हमरा सब पहुँची त देखिएक कतहु ककरो नै मुदा बैरक आँठो सद्यः चिबाओल झइरैत अनवरत । ई सतबेक बदमासी छल । पहिने आबि पूबलिया कातक सुगवा बैरिक भोंभमे सुटकिक मोन भरि बैर दकरि रहल अछि ।

फेर त, हमरो लोकनिके ओ बैर परि भेल मुदा सतवेक कृपासँ । सतवा निस्वभावेन आँजुरक आँजुर बैरक उपरेसँ वृष्टि करय लागय । केहेन उदार, कतेक विशाल, कतेक निस्वार्थ । से बात तखनो 'हमरा लोकनिक बाल-हृदय जी-भरि जामुन चाभि कबूल करले करय ।

मुदा सङ्गे ओ महाग धूर्त छल । कखनो देखी त ऊपरस देहपर खाली आँठीए बजरैत अछि । रौ, सतवा तोन् बड़ धूर्त छैय सरिपहुँ । उत्तरमे बाऊ त ओलि सधैबौ ।

फेर हम सब कबड्डी बम्भाबी घण्टो धरि आ जएह देखिएक जे जनऊआ गाछ लग दऽ कऽ किओ बटोही जा रहल अछि कि दबकिक ओकरे दिस दौड़ि जाइ केओ एम्हरसँ केओ ओम्हरसँ । जखन पहुँची त एकसँ एक नवीन उत्पातेक सृष्टि । कखनो सतवा फिड़कि मारि कोनो बूढ़-बटोहीकेँ कुहरावए आ कखनो मात्र गर्दे—मुटो भर स कम बालू नहिए भोंकि पार ।

सतवाकेँ कनिओ साँझमे देरी होइक नइ कि पछबरिया आरा परस एकटा कर्कश डाक कान फाड़बाक सफल कोशिश करय । देखतहि - देखितहि सतवा लग एक वृद्धा—वात्सल्य आ निराशाक-जीर्ण प्रतिमा आबि ठाढ़ अछि.....ओकरे नानी । कतेक मात्सर्यसँ ओकरा भोंटकीकेँ पोछैत, फुसियवैत, किन्तु सदिखन चिकरैत आ नोर बहबैत आँगन दिस बिदा होअए ।

सएह सतवाक नानी.....। प्रायः दुइए मासक बाद माघक भूपसीमे एक राति सर्द पड़ि गेलैक । सतवाकेँ अनाथ आ निस्सहाय छोड़ि सबदिनुका हेतु । सतवा सेहो ओहि कन्न-कन्नीमे पजरैत ऊक नानीक मुँहमे लगाए अनहर मुँहे जे कतहु ससरि गेल से अकस्मात् आ संयोगवशात् आइए देखैत छिएक ।

ईह, आँखि केहेन धँसि गेलैक अछि, गाल केहेन खाधि सन बुझाइत छैक—शरीरक ओ कान्ति, ओ तेज ओ आभा आब कहाँ छैक ?

हमहूँ कओलेजक जीवन पारकय सेक्रेटरियटक फाइलक शरण ल लेलहुँ अछि आ ऐही बीच सतबोक स्थितिमे सामूल परिवर्तन ।

बाटाक 'ऐम्ब्रैडर'मे कमीज-पतलूनपर सगर्व आँखि फेकैत आफिस दिस बिदा होइते छी की अकस्मात डेराक फाटक पर एकटा घिनौन आकृति आबि ठाढ़ भेल । केस बेस पैघ-पैघ, आ सेहो एकदम ठाढ़ । गुदड़ी-चेथड़ीक अनावश्यक भार उठौने एकदम मैलकाटि आ अङ्ग—अङ्ग दुर्गन्धाभिषिक्त । हाथमे एकटा फूटल बोतलक अधगेंद नेने ।

हम नाक पर रुमाल राखि कतिआक बढ़ि गेलहुँ ओ पछोड़ थएलक । एक ठाम एकान्त पाबि हमरा दिस किछु संकेतो कैलक ।

आहि रौबा, ई त सतवा थीक, सतवा.....बादमे ओकरे मुँहसँ पता चलल जे आव ओ इएह सब व्यवसाय ध क प्रगति पथपर प्रतिक्षण अग्रसर होइत संसारक आँखिमे मुट्टीक मुट्टी बालु भोंकि रहल अछि ।

मा एतबे

श्रीवेदमित्रमिश्र

दिनेक पूजापर बइसितहि अप्रत्याशित विचारधारामे भसिआ गेलउँ । हम नीक नहि कैल, प्रतिज्ञा कए लेल जे 'दैनिक स्वदेश'केँ छोड़ि भविष्यमे कोनो आन भाषाक दैनिक पत्र आव नहि पढ़ब । ता धरि आँखिक सोभाँ एकटा नाचक दृश्य आबि गेल । पुरनका घटना थोक, आगरामे मैथिलेतर मित्र लोकनि कोनो लाथेँ हमरा ओइठाँ लए गेलाह, जाहिठाँ मौगीगणक नाच भए रहल छल । एकटा नवयौवना सुन्दरी नाचि रहल छलि ओ आन मौगी-सभ थपड़ी पाड़ैत गाबि रहल छलि—'क्या नाचै, क्या नाचै, क्या नाचै जी ।' हम किंकर्तव्यविमूढ़ भए बताह जकाँ बहुत देरि धरि बेसले रहि गेलउँ । अम्कके हमरा फुरल—विद्याःसमस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियो समस्तास्तव देवि रूपम्" बेस, नचनिहारिकेँ माइए बूझि कहलिएक—

मडइत छी, मडइत छी, मा ! एतबे ।

मिथिला ने शिथिला कहियो कहावए, मडइत छी मा एतबे ।

आलस्य देवक पूजाकेँ त्यागए, मडइत छी मा एतबे ॥

'वैदेही' दैनिक अही वर्ष होअए, मडइत छी मा एतबे ।

'मिथिला-मिहिर' फेरि ज्योति पसारए, मडइत छी मा एतबे ॥

मिथिलाक भाषा घर घर मे गूँजए, मडइत छी मा एतबे ।

'वेद' सभक भाष्य वैदिक बनावए, मडइत छी मा एतबे ॥

सभटा कागतपर लिखि लेल तँ नाचक दृश्य अदृश्य भ गेल आर हमहुँ स्वस्थ मोने पूजा-पाठ करै लगलहुँ ।

हरिद्वार-वास

पूर्व कथनानुसारे मालती ओहि रातिमे शिवनगरसँ विदा भ' गेलीह ।

एतबे दिनमे ओ एतेक दुर्बल भ' गेलि छलीह, जेना कतेक दिनु'क रोगिणी होइथि ।

रंग क्षामसन, गाल'क हड्डी उभरल-उभरल, सउ'मे देह सुखाएल, सुन्न ।

मुदा,

ओहि राति हुनकर आँखिमे एकटा विशेष ज्योति, विशेष आभा चमकइति रहइनि ।

जेहेन ज्योति भूतिआएल बटोही'क आँखिमे रस्ता भेटि जएबा' पर चमकइत छइक !

—श्रीकल्पनाशरण ('रंगीन परदा')

'वैदेही' कथा-विशेषांकमे श्रीकल्पनाशरणक गल्प 'रंगीन परदा' पढ़ि अकस्मातें जेनाँ मालती आँखि'क दृष्टिपथ एवं मोनक अंतर्दृष्टिमे धूआँक पातरि, नमरइति, कुंडली मारइति शिखा जकाँ पसरए लगलीह ।

अकस्मातहिं सात वर्ख पहिलु'क सभ कथा, सभ गाथा मोन पढ़ि गेल ।

मालती ठीके कहने छलीह.....

मालती ठीके कहने छलीह जे मालती'क पति, श्रीमहाकान्त'क हत्या गरदनि दाविक' मोहनेजी कएने छलथिन ।

मालती कहने छलीह जे महाकान्तसँ विवाह हेबा'क पहिनइसँ ओ मोहनजीक अलिंगनपाशमे आवद्ध भ' गेल छलीह ।

मालती जेहि 'रंगीन परदा'क अ'दमे नुका'क' अथवा जेहि रंगीन परदासँ सउँ से शरीर भाँपिक' पुण्य-पाप'क अन्तर बिसरि गेल छलीह, तकर मार्मिक कथा बाँचिक ।

फ्रेंच उपन्यासकार एमाइल जोला'क उपन्यास 'लब्जा' (The shame) स्मरण भ' गेल । परपुरुष-रति सभ युग ओ सभ देश'क कथा'क मुख्य विषय थीक । पर-रति सुन्नरि ओ सउभाग्यवती नारी'क आभूषण थीक—

सउँ से भारतीय धर्म ओ साहित्य विदग्धा राधा-रानो'क पर-रति—कथासँ भरल अइछ.....

मुनिपत्नी अहिल्या.....

स्पार्टा'क महारानी हेलेन.....

इजिप्ट'क महासुन्दरी क्लियोपैट्रा.....

टाल्स्टायक'क महानायिका अन्ना केरेनिना.....

फ्लॉबेयर'क आर्कांतामयी मादाम बोवेरी.....

शरच्चन्द्र'क किरणमयी.....

आ'

श्रीकल्पना शरण'क मालती.....

मुदा,

पर-रति आँ फेर पति'क मृत्यु'क पश्चात् स्नेही मोहनजीसँ पवरक्ति-टा मात्र मालती'क कथा नई.....

ओतबा' कथा त' ओहि महाकथा'क मात्र पूर्वाभास थीक, जे महाकथा सँ सँ समाजमे, सँ सँ देसमे, सँ सँ संसारमे प्रतिदिन लिखल जा रहल अइछ ।

मालती हमरो जीवनमे किछु दिन'क हेतु आएलि छलीह, सएह कथा ह' कइइत छी ।

पतिविहीना, गृहविहीना, मर्यादविहीना, धर्महीना मालती शिवनगरसँ चलि आएलीह, मुदा, अब कतए जाइति ?

संगमे पाँच बर्खक बेटा, बिलटू छलइनि, ओकरे संगे जीवन'क अन्हार रातिमे बरआवए लगलीह ।

मात्र आँखि'क ज्योतिसँ कतए रस्ता भेटि सकइत छइक ? रस्तापर चाही प्रकाश-स्तम्भ, नई त' माटि'क दीपको चाही, नई त' चाही कोनो पथ-प्रदर्शक संगी.....

स्वामी'क मृत्यु'क उपरान्त एक्को दीन सासुरमे मालतीकेँ नीक नई लगलइन । जेनाँ, आँगन, घर, दरबजा, केबाड़, खिड़की, पलंगड़ी सभ मालतीकेँ बुभुक्षित राकस जकाँ खएबाक हेतु तइआर.....

बिलटूकेँ पुर्निया, मामा लग, पढ़बाक हेतु पठा देलथिन आँ अपने रमपिअरिआ खवासिन'क संगे गंगा-वास'क हेतु विदा भ' गेलीह । खेत-पथार, जथा-जाल जे छलइनि, सभ बेचि लेलइनि, जे किछु बिका' नई सकल, बाँटि देलइनि ।

हरिद्वार !

हरिद्वार स्वर्ग'क महाद्वार थीक । हरिद्वार धर्मप्राण भारतवर्ष'क महातीर्थ थीक । एतए गंगा'क निर्मल धारमे एको डुबकी लगएला'सँ जन्म-जन्मान्तर'क पाप धोआ जाइत छइक ।

तई,

मालती हरिद्वारे अएलीह ।

गंगा'क मुख्य मन्दिर'क समीपहिं, एकटा धर्मशालामे कोठली किराया पर लेलइनि । नित्य दुन्नू साँझ गंगा-स्नान, पूजा-अर्चना, अपनई हाथें भानस-भात आँ साधू-महात्मा'क दर्शन ।

मुदा,

पश्चाताप'क ज्वालासँ, प्रायश्चित'क भावनासँ मालती भरकि रहलि छलीह— महाकान्त-सन सामर्थ्यवान् पति'क रहइत, मोहनजीसँ पाप-संबंध किअएक कएलइनि ? तीन-चारि बेरि मोहनजी'क पत्र अएलइन, जे, मालती, अहाँसँ हरिद्वार—वास नई हएत । अहाँ शिवनगर घुरि आउ । हम अहाँकेँ रानी जकाँ राखब । अहाँ बिना किछु नई सोहाइतछि । आदि-आदि ।

मालती पत्रकेँ पढ़िक' और सुझाह होइति रहइथि ।

क्रमशः, मोहनजी'क पत्र आएब बन्न भ' गेलइन ।

आँ, हरिद्वार'क स्वस्थ आ पवित्र वातावरणमे मुरझाएलि मालती पुनः रूप, रस, यउवन, आँ परागवती होबए लगलीह ।

पुनः रूप'क ज्योति मोन'क हाहाकारकेँ मलीन करए लगलइन । पुनः कटाओल केश पीठ पर उधिआबए लगलइक । पुनः रस'क मातलि, रस'क मारलि मालती धर्मशाला'क अप्पन कोठलीकेँ भीतरसँ बन्न क'क' गाबए लगलीह—

का' पर करब सिंगार ।

पिआ बिन लागए जगत अन्हार ॥

कहबाक साराँश एतवे, जे मालती'क लता पुनः हरिअरि, पुनः पुष्पवती भ' गेलीह । भोरे सूति क' उठइथि त' चाह पीबाक, पान खएबाक तीव्र इच्छा होइनि । गंगा - स्नान'क उपरान्त अपनहि हाथें साड़ी खीचइति आसकति भूक्ति पड़इनि । भोजन करबाक उपरान्त रामायण पढ़ए लागइथि त' मोन

कहइन जे जा' क' सिनेमा देखि अबितउँ । अहिनाँ बहुतो-किछु मोन होइनि
.....हमरा बूझएमे ई गप्प मालतीकेँ देखितहि आबि गेल !

सायंकाल हम हर'क पैड़ी लग टहलइत छलउँ । सायंकाल गंगा-वायु-सेवन
करइत हमरा बड्ड नीक लगइतछि ।

अकस्मात् ,

भीजल केश सउँसे पीठ पर छितरएने, हाथमे भीजल साड़ी रखने, हमर
अप्पन भउजी, मालती चलि आबि रहलि छइथि ।

महाकान्त—भैया'क विवाह भेला'क छबे—सात मास पश्चात् हम सन्यासी
भ' गेल छलउँ । तई, मालती-भउजीसँ एक्के-दू बेर'क भेंट । मुदा, हुनकर
स्वरूपमे किछु एहेन वस्तु, किछु एहेन तत्त्व, जे एक बेरि भरि आँखि देखि
लेबा'क पश्चात् जन्म-भरि हुनका बिसइरि सकब असंभव ।

बिन सिन्दूर'क रेखा, बिन सोहाग'क चूड़ी, बिन सिंगार, श्वेत वस्त्रमे जुआएल
शरीरकेँ नुकाओने मालती-भउजीकेँ देखलिअइन त' मूँहसँ बहार भ'
गेल—भउजी ! भउजी ! बड़की भउजी !!

हम सन्यासी छी । गेरुआ-रंगमे रंगल रेसमी वस्त्र पहिरब नीक लगइतइछ ।
साधू-सन्यासी'क संगति, भक्त-जन'क सेवा-श्रद्धा आँ तीर्थ-तीर्थ घूमब
हमरा परम प्रिय अइछ । मुदा, हम रामकृष्ण परमहंस नई छी । जेना
गृहस्थ'क हेतु खेत-पथार, बनियाँ-व्यापारी'क हेतु दोकान-दउरी, पढ़ल-
लिखल व्यक्ति'क हेतु सरकारी नउकरी होइत छइक, हमरो हेतु ई सन्यास एक
प्रकार'क व्यापारे थीक । बेसी पढ़ि-लीखि नई सकलउँ, गामपर बेसी
संपत्ति नई छल जे मोन'क सभ सेहन्ता' पूरि सकितए, तई सन्यासी भ'
गेलउँ । आँ, कलियुग'क सन्यासीमे जे गुण होइत छइक, सभ'क समावेश
हमरामे अइछ ।

स्वस्थ मुखाकृति, मिष्ट-भाषण, शरीरसँ भभकइत यउवन आँखिमे सम्मोहन'क
शक्ति !

तई, मालती-भउजी हमरा चीन्हि नई सकलीह, घोर आश्चर्य'क दृष्टिसँ हमरा
दिस तकइति रहलीह । निकट जा'क' हम पएर छूबि, प्रणाम कएलिअइन—
भउजी, हमरा नई चीन्हि सकलउँ ? हम छी मायाकान्त ! अहाँक विवाह'क
समयमे त' हम छलउँ

गाम-घरसँ एतेक दूर पर अप्पन लोक भेटबाक कारणेँ प्रसन्नतासँ भउजी'क आँखिसँ नोर बहए लगलइन । आँ, ओहीठाम गंगा-घाट'क सीढ़ी पर बइसि ओ हमरा सभ कथा कहि गेलीह, सभटा सत्ते-सत्ते कथा कहि गेलीह—कोना मोहनजीसँ हिनका प्रेम-संबंध भेलइन, कोनाँ महाकान्त-भैयासँ विवाह भेलइन, फेर कोनाँ भैया'क पहिल स्त्री'क बेटी मोहिनीसँ मोहनजीक विवाह भेल, फेर कोनाँ पति आँ बेटीसँ चोरा-नुका'क' मालती मोहनजी अर्थात् अप्पन जमाए लग जाइति रहलीह । आँ, कोनाँ महाकान्त एक राति दून्नूकेँ एक्के घरमे देखि लेलथिन.....

पश्चाताप, वैकल्य, लज्जा आँ परितापसँ कनइति, मालती बड़ी काल धरि सीढ़ी पर बइसलि रहलीह ।

फेर कहलइन—सँगमे खवासिन छल । सेहो परसू राति खन किछु गहना आँ रूपइआ—पइसा चोरा'क' भाइगि गेलि । आव एसकरिए धर्मशालामे पड़लि छी । राति भरि भयसँ, चिन्तासँ निन्न नई होइति अइछि । भउजी'क चिन्तासँ चिन्तित होइत, हम बजलउँ—भउजी, सन्यासी'क आश्रम त' भगवान'क स्थान होइत छइन । अहाँ हमरा आश्रममे चलू । कोनो कष्ट नई हएत । कतेक सन्यासिनी रहइति छइथि । अहूँ रहब । भगवान'क भक्ति—भावमे पूर्व-जीवन'क सभ पाप भस्म भ' जाएत । भगवाने-टा पर विश्वास राखू, भउजी !

हाथ पकड़इति, द्रवित भ'क' मालती बजलीह—दिअरजी, अहाँ सन्यासी नई छी, देवता छी ! हमरा सन पतिता पर अहाँकेँ दया-भाव भेलमोने-मोन हम हँसलउँ—एहेने दया-भाव करब त' हमर दैनिक—कर्म थीक !

धर्मशालासँ भउजी'क पेटी - बक्सा आँ ओछाओन - विछाओन ल'क' नौ बजे रातिमे 'कनखल'-स्थित अप्पन 'सन्यासाश्रम' कल्याणाश्रममे पहुँचलउँ ।

मुख्य-द्वारे लग कामवती ठाढ़ि छलीह । ई कामवती आश्रम'क सभसँ सुन्नरि आँ अल्पवयसा सन्यासिनी थिकी । तइँ, हमर बड़ प्रिय छइथि । प्रयाग'क महाकुम्भमे हेराए गेलि छलीह । ने गाम'क नाम मोन रहइनि, ने माय-बाप'क नाम । हमरे एकटा सेवक—सन्यासी हिनका ओतएसँ एहि आश्रम मे अनल'क ।

शरद-रितु'क चन्द्रमा जकाँ छइनि कामवती'क रूप—अमृत सन शीतल ।
मुदा, मालती—भउजी छइथि जेठ'क तमधल सूर्य-रश्मि । दिनकर स्वरूप
आगि सन धधरा फेकइत रहइत अइछ, बिन जरनें कोनों उपाए नई !

तुलसी—चउरा लग ठाढ़ि, बिहुँसइति कामवती बजलीह—मायानन्द-स्वामी !
ई हम्मर दीदी के छइथि ?

हम बजलछँ—अहीँक दीदी छइथि । आश्रमेमे रहतीह । और वेसी बूझि क'
अहाँ की करब, कामो ? जे पूर्व-जीवन'क सभ पुण्य-पाप, माँ गंगाकेँ
अर्पित क'क' भगवान'क शरणमे आएल अइछ, तकर परिचय की ?

मालती स्थिर दृष्टिँ राधा-कृष्ण'क मन्दिर दिस ताकि रहलि छलीह । काम-
वती हुनकर हाथ पकड़ि क' अप्पन कोठली दिस ल' गेलीह । हमहूँ सन्यासी
सभ'क निवास दिस विदा भेलछँ ।

रातिमे एगारह बजे'क उपरान्त कामवती मालती'क रहबा'—सहबा'क समु-
चित प्रबन्ध कए, हमरा कोठलीमे अएलीह ।

चारू-कात परम निस्तब्धता छल । केवल, गंगा'क प्रखर धारा'क स्वर वायुमे
संगीत प्रसारित करइत ।

बिन पाढ़ि'क उज्जर साड़ी पहिरने, मनीपूर'क नर्तकी सभ जकाँ केश'क
जूड़ामे वेली—फूल'क माला लपटओने, हँसइति, कामवती प्रवेश कएलइनि ।
जेहि पलंग पर हम सूतल छलछँ तकरे कोर पर बइसइति, बजलीह—माया-
स्वामी ! मालती अहाँक अप्पन भउजी हेतीह ?

साकाँ होइत उत्तर देलछँ—हँ ! किअएक ? की भेलइए ?

भेलइए त' नई ! मुदा, एहि पाप-आश्रममे हुनका किअएक अनने छिअइन ?
अहाँकेँ अप्पन भउजिओ पर दया-माया नई होइत अइछ ?—हम्मर पएर
जँतबाक उपक्रम करइति कामवती कहलइनि ।

हमरा हँसी लाइगि गेल । स्त्रीकेँ सहानुभूति आँ ईर्ष्या दुन्नू बड़ शीघ्र होइत
छइक । आइ कामवतीकेँ मालती पर सिनेह छइनि, सहानुभूति छइनि, मुदा
काल्हि जखन आश्रम'क भंडार-गृह'क कुंजी'क भण्वा कामवती'क हाथसँ
खसि'क मालती'क हाथमे चलि जेतइनि, तखन ? तखुनका' स्थितिकेँ विचारि
क' हमरा हँसी लाइगि गेल ।

कामवती'क बाँहि पकड़ि, हुनका अप्पन छातीमे सटबइति, हम हँसइत रहलउँ । ओ किछु काल धरि छटपटाइति रहलीह, फेर, भाँग'क नशाँमे मस्त जकाँ हमरा देहपर पड़ि रहली ।

जखन, एहि 'सन्यासाश्रम—कल्याणाश्रम'क मुख्य सूत्रधार, हमर श्री१०८ गुरुदेव, श्रीकल्याणानन्द स्वामी'क गोलोकवास भेल छलइन, त' आश्रममे मात्र आठ-दस सन्यासी—परिव्राजक ओ दू-टा भक्तिन छली । मुदा, आइ हमर बल-कौशल'क कारने नित्य साठि-पइसठि साधू-सन्त आश्रम'क भंडारामे प्रसाद पबइत छइथ ओ बीस-एकइसि-टा सन्यासिनी कुनू साँफ राधा-कृष्णक मन्दिरमे आरती करइति छइथि ।

ई निश्चय मानि लिअ' जे धर्म'क रक्षा ओ परब्रह्म'क भक्ति केवल भजन—पूजनसँ नई भ' सकइत अइछ । हमर सनातनधर्म रक्षित अइछ याह आडम्बरसँ, विशाल मन्दिर सभ'क पइघ स्वर्ण-कलशसँ ओ हमरा सन वैरागी, अनासक्त-सन्यासीसँ...

तई, परम धार्मिकका कामवती, स्वर्ण-लता सन सुन्नरि कामवती अभ्यासानुसार बिना किछु प्रतिरोध कएनई आत्मार्पण क' देलइनि ।

तई, दोसर दीन भोरे जखन सेठ बाँकेमल राधा-कृष्ण'क दर्शन करए अएलाह त' आँखि मूनि क' पूजा करइति मालतीकेँ देखि हुनका पिआस लागि गेलइन । सत्ते, सन्यासिनी'क भेस मे मालती अनमन कालिदास'क बनवासिनी शकुन्तला सन लगइति छइथि, शैवाल—चाल—लिप्त कमलिनी सन लगइति छइथि...

हमरा एकान्तमे ल' जा' क', सेठ बाजल—गुरुजी, हमर विचार अइछ जे हम राधा-कृष्ण'क मन्दिर'क फर्श असली संगमरमर'क बनवा दी । कतेक खर्च लगतइक ?

सेठकेँ कुसी पर बइसबइत हम बजलउँ—सेठजी, अपने'क कृपा रहतइक त' सउँसे आश्रम संगमरमर बनि जाएत ! मुदा, एखन अपने ई कहू जे अहाँक मोन कुम्हर भसिआएल अइछ ?

किछु काल धरि गप्प करबाक उपरान्त सै रूपइआ'क एकटा नोट हमर कुरता'क जेबीमे खसा'क' सेठ चल गेल ।

ओ, अएलीह मालती ।

हँसइति बजलीह—दिअरजी ! अपने'क ई आश्रम त' बड़ विशाल ओ बड़ शान्तिदायक अइछ । ओ, राधा-कृष्ण'क मूर्ति केहेन सजीव छइन ।

हम पुछलिअइन—कोनो कष्ट त' रातिमे नई भेल ?

नई, नई, कष्ट की हएत ! तइमे कामो छलइथि, सभ वस्तु ठीक-ठाक क' देलइनि । बड़ नीक स्त्री छइथि ! —मालती बजलीह ओ फेर, दू-चारि-टा सन्यासीकेँ इन्हरे आबइति देखि, चलि गेलीह ।

फेर,

रातिमे दस बजे हम मालतीकेँ बजबओलउँ । रातिमे दससँ बारह बजे धरि हम समाधिमे रहइत छी, ई सभकेँ बूझल छइक । तई, कोनों भय नई !

कामवती मालती'क साँध्य-शृंगार क' देने छलइनि—कपार पर रामनामी चानन, केशमे, ओ गरदनिमे, ओ वाँडिमे बेली'क माला, ओ ठोर पर मन्द-मधुर मुस्की ! सत्ते कहने छलउँ जे मालती छइथि कालिदास'क शकुन्तला ! बजलीह—दिअरजी ! किअएक बजओने छी ? कोनो विशेष काज अइछ ? मालती'क अएबा'सँ पहिनई आध बोतल अँग्रेजी शराब पीबि लेने छलउँ, तई बेसी देरी धरि हुनका भ्रममे राखब उचित नई बूझि पड़ल ।

कहलिअइन—मालती, केबाड़ भिड़ा दिअउक, नई त' किओ आबि जाएत ! हमरा ओखि दिस तकइति मालती भीतरसँ केबाड़ लगा देलथिन ।

फेर कहलिअइन—लग आउ !

मालती पलंग पर आबिक' बइसि रहलीह । तखनहि बुझलउँ जे मालती रसिके-टा नई, बुद्धिमती सेहो छइथि । एहि प्रकारे, मालती'क जीवन'क एकटा नवीन परिच्छेद, एकटा नवीन कथा आरम्भ भेल । बाँकेमल सेठ मालती'क हेतु आश्रममे हजार-पाँच-सै टाका खर्च कएल'क' ओ, मालती सेठ'क संगे सिनेमा जाइति रहलीह, ऋषिकेश ओ लक्ष्मण-भूला जाइति रहलीह.....

मोन मे बिना कोनो हर्ष - विषाद कएने मालती राधा-कृष्ण'क सेवा करइथि । बिना कोनो दुःख-अवसाद कएने मालती भक्त-समाज आ साधू-सन्तक सेवा मे लागलि रहइथि ।

एक दिन बान-गंगाक महायोगी, सिद्धराज श्री१०८ आत्मानन्दजी आएल छलाह । मालतीकेँ देखितहिं चिकरलाह—भइरवी ! भइरवी ! माँ तोमि भइरवी आचे ।

आत्मानन्दजी असीसँ अधिक वएसक छइथ । हिमालयक बरफमे रहबाक कारणेँ हाथ-पएरक आँगूर गलि गेल छइन । दम्मा भ' गेल छइन तकरे चिकित्सा करबए आएल छलाह । मुदा, तइओ मालतीमे हुनका भैरवीक दर्शन भ' गेलइन ।

प्रातःकाल पाँच वजे आत्मानन्दक कोठलीसँ मालती बहरएलोह त' हम चउकी पर बइसल दतमइनि करइत छलऊँ ।

एतवे बजलीह—बड्ड सिद्ध महात्मा छइथ ई आत्मानन्दजी ! एखन धरि मोन त' बीसे-पचीस वर्षक छइन । मुदा, बेचारे कर्तु को शरीरे संग नई दइत छइन ।

आत्मानन्दक स्थिति पर दुःख प्रकट करइत मालती गंगाक घाट दिस चलि गेलीह । अपन स्थिति पर दुःख प्रकट करबाक मालतीकेँ अवकाश या इच्छा नई छइनि । किअएक रहइनि ?

एतवे दिनमे सउँसे आश्रमक सभ व्यवस्था हाथमे क' लेने छइथि । काम-वती, सुमित्रा, सावित्री, मीनाक्षी आदि सभ सन्यासिनी हिनकर दासी भ' गेलि छइनि । साधू-सन्यासी हिनकर कोनो गप्प, कोनो आज्ञा अस्वीकार नई कए सकइत छइथ ! मोहनजी जनिका शिवनगर स्टेटक रानी बनबए चाहइत छलाह, से मालती सन्यासाश्रम-कल्याणाश्रम स्टेटक महारानी छइथि ।

मुदा, एक दीन मालतीक सन्यास-जीवनमे अनायासे विघटन भ' गेलइन । हमरे संगे घोड़ा-गाड़ी पर घूमए जाइति छलीह । अकस्मात गंगा कातमे नबका पुल पर पत्नीक संगे ठाढ़ भेल ।

सायंकालक गंगा-छवि देखइत मोहनजीपर मालती दृष्टि पड़ि गेलइन । जेना, मालतीक सउँसे देहमे दिआसलाइ खरड़ि देने होइनि ।

घोड़ा गाड़ी रोकवइति बजलीह—करियाबाबू, हम आश्रम जाइत छी । वएह पुल पर मोहनजी ठाढ़ छइथ । अहाँ पाछूसँ पता लगाक आउ जे ओ कतए

ठहरल छइथ । आ' कहुना एहेन व्यवस्था करु जे आइ रातिमे ओ आश्रम आवइथ ।

हम गाड़ीसँ उतरि गंगाक पूल दिस विदा भेलउँ ।

मोहनजी सत्ते बडु सज्जन व्यक्ति । समीप गेलउँ, गप्प-सप्प भेल, बहुत काल धरि देश - विदेशक गाम घरक कथा कहइत रहलाह । जखन मालतीक विषयमे कहलिअइन त' चकित भ' गेलाह । पता लागल, स्टेशने लग अजन्ता निवासमे ठहरल छइथ, एखन तीन दिन रहि, ऋषिकेश, स्वर्गाश्रम आदि देखइत जएताह ।

मोहनजीक पत्नी सेहो बडु सुशील, बडु नीक मूह - कानवाली ।

किछु समयक पश्चात् हुनका दून्नूसँ विदा भ' क' अप्पन आश्रम अएलउँ । मालती पटिआ पर बइसलि कामवतीसँ किछु एकान्ती गप्प क' रहलि छलीह । हमरा देखइति उठि क' ठाढ़ि भेलीह । पुछलइनि - काज भेल ?

हँ, काज भेल । रातिमे दस - एगारह बजे अएताह ।

अप्पन पुरान स्नेही व्यक्तिक भेंट करबाक आशामे मालती बडु प्रसन्न छलीह ।

राति भेल ।

हम अप्पन कोठलीमे गीता पाठ करइत छलउँ तखनइँ रेसमी कुरता, रेसमी चरि आ सिकिया कोरक महीन धोती पहिरने, पानक खिल्लीसँ दून्नू गाल भरने शिवनगरक स्टेटक विलास-प्रिय जमिन्दार मोहनबाबू अएलाह ।

बरन्डामे जूता उतारि, कोठलीमे प्रवेश करइत बजलाह—हम अपनेकेँ वचन देने छलउँ, आ मालती दाइसँ भेंट करबाक बडु तीव्र इच्छा छल, तइँ आएल छी । नइँ, त' परदेसक बात छइक । हमर स्त्री होटलमे एसकरिए छथि । जँ कहीं किछु भ' जाइनि जँ किओ लोफर, गुन्डा आविक तंग करइन.....

एतबेमे मालती अएलीह ।

ई सन्यासिनी मालती नइँ छलीह, ई छलीह मोहनजीक 'प्रेमिका मालती'—जारजेटक बनारसी साड़ी, वक्तक सौन्दर्यकेँ उधार करइन रेसमी आँगी,

परम कारीगरीसँ बान्हल केश-पास आ, कानमे जगमग करइत हीरासँ जड़ल स्वर्ण फूल । मालती, मालती नई इन्द्र-काननसँ उतरलि कोनो अप्सरा छइथि हमरा सएह बूझि पड़ल ।

मानिनी, प्रणय - प्रगल्भा नायिका जकाँ हँसइति, बजलीह—कुमरजी ! अपने त' हमरा बिसरिए देलिअइक । ई त' हमर बड़ नीक भाग्य छल जे एखन अपने आएल छी !

कुमरजी किछु नई बजलाह,, बाजि नई सकलाह, मालती' क पूर्णचन्द्र सन सूपमे हेराएल रहि गेलाह ।

तखन,

मोहनजी'क हाथ पकड़इति, मालती कहलथिन—अपने हमर कोठली मे चलू । ओतइ गप्प करब !

हमरा दिस सलज्ज भावें ताकि मोहनजी मालतीक संगे चलि गेलाह ।

हम परम उत्सुकता-पूर्वक मोहनजी'क घुरबाक प्रतीक्षा करए लगलहुँ । एगारह, बाजल, बारह, एक, दू बाजि गेल ।

मुदा,

ने मालती अएलीह, ने मोहनजी अएलाह । किछु शंका भेल, जे मोहनजी सँगे मालती भाइगि त' नई गेलीह ! आश्रम'क सभ रूपइआ-पइसा हुनके जिम्मामे रहइत छइनि...

हुनका सभकेँ तकबाक हेतु विदा भेलहुँ ।

मालती' क कोठली खाली छल । कामवती सेहो अपन कोठलीमे नई छलि ।

तखन सोचलहुँ आश्रमक गंगा-घाट दिस तकबाक चाही । उम्हरे गेलहुँ । घाटक' सीढ़ीपर मालती आ कामवती बइसलि छलीह, ओ परम आनन्द-मग्न भ' क' हँसि रहलि छलीह ।

हमरा देखितहि कामवती हमरा भरि पाँज क' पकड़ि लेलइनि ओ बजलीह—बाप-रे ! बड़ भारी छलइक !

कामवती'क मुँहसँ शराब'क गन्ध आबि रहल, छलइनि आ मालती'क आँखि दिस तकला'सँ बूझि पड़ल जे इहो पीने छइथि । देहमे सटलि, कामवतीसँ पुछलिअइन—अहाँ सभ एत्तेक हँसइति किअएक छी ? मोहनजी कत्तए छइथ ?”

कामवती फेर हँसए लगलीह आँ हँसिते - हँसिते बजलीह—हुनके द' त' कहि रहल छी । एह बड्ड नीक लोक छइथ ।

मालती-दीदी'क जीवन नास क' देलथिन । बाप रे, कत्तेक भारी छइथ । मालती लग अएलहुँ । ओ चुप्पे छलइथि । हुनको पुछलिअइन—भउजी, मोहनजी, कत्तए गेलाह ?

बड़ी काल'क पश्चात् बजलीह—“मोहन-जी नई छइथ । एहीठाम आनि'क अँग्रेजी शराब पिआ' क' हाथ-पएर बान्हि हम आँ कामवती मिलि कए हुनका गंगामे भसिआ' देलिअइनि आव त' हुनकर शव बीस-पचीस कोस बहि गेल हेतइन ।

फेर कनी थम्हि'क बजलीह—एह, अहीमे बड़ी काल लाइगि गेल । चलू, आव सूत'क चाही । नई त' भोरमे अवेर के' निन्न टूटत ।

मालती परम शान्त छलीह ।

मोहनजी'क गंगा-लाभ'क गप्प विश्वास नई भेल ।

मुदा, कामवती हँसइति-हँसइति मोहनजी'क नीलम'क अउँठी, कुरता'क सोना'क बटन आँ ममी-वेग देखए देलइथि ।

मोहनजाक मनीवेगमे छलइन चारि सैसँ अधिक टाका, से आश्रमक हिसाबमे जमा करवा' देलिअइक । सन्यासी सभक भरि सालक गाँजा भाँगक दाम बहार भ' गेल ।

आ, वचलीह मोहनजीक स्त्री । मालती दोसरे दिन होटल जा क' हुनका आश्रम ल' अएलथिन ।

मोहनजाक स्त्री सेहो बड्ड सुशील, बड्ड सुन्नरि.....

जोतखी कका

जोतखीकका भुनकुट बूढ़ भ' गेला, मुदा 'आलू' तँ विश्वसुन्दरी 'हेलेन' क रूप धारण कएकेँ आएल; द्रोजन युद्ध जेकाँ इहो संग्राम अनवरत चलैत रहल, सुकुर जे अंग-भंगक घटना बहुत योड़ मेल, आव तँ हुनका निन्त्रोमे बाधा पड़ए लगलैन; आँखि मुनाइन की बुझि पड़ैन जेना चारसँ भटा-भट आलू खसैत अछि कानमे विचित्र प्रकारक स्वर पैस जाइन्ह तँ अध - निन्त्रोमे फराठी उठा बाहर दिस जोर करथि—'ठाढ़ रह सार, आइ तोरा हम...पितिआक सगाइ...'

जोतखीकाका आर किछु रहथु वा नहि, सफल बारिक छला । ओना तँ बेसीकाल नोने-मेरचाइ परसथि आ' कहिओ - कहिओ तिलक अँचार (धुर तिलक कतौ अँचार होइक !) मुदा परसब धरि रहैन विशुद्ध कलात्मक; नवयुवककेँ भोज खाइत काल 'कक्कू' मोन पड़ि जाइन ओ पण्डित लोकनि केँ 'अष्टावक्र मुनि' । पात पर नोन-मेरचाइ खसैत देखि पञ्चकेँ साधारणतः स्थित - प्रज्ञता प्राप्त भ' जाइ छैन्ह, परञ्च जोतखीकाका अपन खुटखुटी चालि दैत समक्ष ठाढ़ भ' जाथि तँ लोककेँ तरकारी उठा-उठा आन दिस राखए पड़ैक, जहिना पराजित किन्तु प्रभावशाली मन्त्रीक प्रवेशक हेतु मुख्यमन्त्रीकेँ स्थान सगिआबए पड़ैछ । हुनक व्यक्तित्वक महिमा एहीसँ वृक्षवाक चाही जे ओ एक छाड़ि दू बेर विनोबाजीक सामूहिक - प्रार्थनासभा भंग क' चुकल छला ।

जोतखी ककाक 'एस्थेटिक सेन्स' नेनेसँ बड़ तीव्र रहैन । एक दिन बाधसँ एक बोझ माल-जालक हाड़ आंगनमे पटकि माएकेँ सोर केलथिन्ह—'माए, ले, आइ ढौरलाहा जारनि आनि देलिऔ अछि ।' त बापक विचार भेलैन जे ई बुद्धिसँ ज्यौतिष पढ़ए तँ वराहमिहिरकेँ पछाड़ि देत, आर्यभट्टकेँ अलगचित्त क' देत । मुदा जोतखी ककाकेँ 'मेष, वृष, कर्क' रटैत-रटैत पीठ कड़कए लगैन्ह, 'मकर' पढ़थि तँ मकरक मेला मोन पड़ि जाइन्ह आ'

‘कन्या’क ध्यान अबैन्ह तँ.....। तथापि ‘आदौ राम तपो वनादि...’क माध्यममे एक मिनटमे समस्त रामायण पढ़बाक फल प्राप्त क’ लेलैन। दिन तकबाक सगुन पहिने एक टाका रहल, ग्रहशान्त करवाक दक्षिणा फराक। हुनका पतरामे बैशाखसँ भादव धरि एकोटा शुभ दिन नहि छलैन्ह, कहथिन—‘मानि लिअ जे अहाँ यात्रा करैछी आ बाटमे रौद तेन भ’ जाए वा वर्षा आरम्भ भ’ जाए, पाथर खसए लागए, त ई कल्पना हमरे पड़त।’ आन मासमे शुभदिन जँ रहबो करए तैऔ ग्रहशान्त करवाक प्रयोजन पड़ि जाए—‘ग्रह महाराजकेँ सन्तुष्ट नहि केने शुभदिनो अशुभ भ’ जाए सकैछ।’ आ’ हुनक ‘अन्दाजीफिकेसन’क कारण कन्यागत तथा वरागतमे मल्लयुद्ध संभावना अधिक बढ़ि गेल तँ सगुनक द्रव्य कोसीक लौटन्ती बाढ़ि जकाँ घटय लागल।

तहिआ अपना ओहिठाम भोजभातमे ‘डलना’क प्रचार कम छल। कहबामे सोझ होइक तँ अधिक लोक ओकरा ‘आलू’ सैह कहए आ’ जे लोकनि भगवानक प्रसादकेँ ‘डस्ट’ कहै छथिन्ह से ओकरा ‘मिक्सचर’ कहल करथि। मुखियाजीक सुपुत्रक कुमरमा भोजमे कलकतिआ सब ‘डलना’क विन्यास कएल तँ जोतखीककाकेँ एकहि बेर प्यादासँ फरजी बना देल गेल। हाथमे ‘डलना’क वाल्टी नेने खन सोझ चलथि, खन टेढ़, खन आगाँ, खन पाछाँ।

‘त्वदीयं वस्तु...’क ठीक अढ़ाइ मिनटक पश्चात् नवतुरिया मंडलीसँ हाक पड़ल—‘जोतखीकका, आलू।’ आ’ प्रस्तावक अनुमोदनमे नब्बे प्रतिशत लोक पात दिससँ मूड़ी उठाए हुनका दिस जिज्ञासु नेत्रें ताकए लागल; ओमहर नेना भुटका सुमुआइत, भिन्ने कुड़बुड़ा’ उठल—‘ऊँ, ऊँ, अल्लू लेव।’ जोतखीकका एक पात दिस बढ़थि तँ दू पात कनमनाए लागए—‘आलू चाही, बढ़ाउ जल्दी।’

मुखियाजीकेँ एक वस्तुक हेतु दूटा बारिक बहाल करब पसिन्द नहि छलैन्ह, अपन सरमजाम देखि नेने छलाह; तँ लोकक नजरि बचा जोतखीकका दिस कनखी चलबथि, फेर अपन मर्दानगी देखबैत कान्ह परक गमछा सरिआबथि—‘जोतखीकका, डेग बढ़ेने, चटकी केने...उभिलने जाउ...’

जोतखीककाक हाथ पाकिकेँ सेरड़ भ गेलैन्ह तैओ अपन पदवृद्धिक स्मरण कए केवल 'इस-इस' कएकेँ रहि जाथि । ताहू पर हुनक समयसक लोक ठुहिकारी देब आरम्भ कएलक—'धुर केहन आदमी के परसए कहलिऐन ! ई तँ भारी पनिमरू छथि, हिनका बुते..... ।'

जोतखीककाकेँ अभिमन्यु जेकाँ चक्रव्यूह भेदन करए अबैत रहैन मुदा ओदिसँ घुरिकेँ आएब नहि सिखने छलाह । अपन बगड़िआक पात पर वाल्टी पटक, अरहूलक फूल सन आँखि केने, डाँड़सँ गमछा फोलए लगलाह—'हे लिअ, बाप जनम कहिओ आलू आँखि नहि देखलिऐ से देख लिअ आइ ! इह, हम जेना सबहक ठकदरूआ ! एहेन असंतोषी रही तँ... कहलकै जे .. जे भोज ने करए से किदन त..... !' लोक 'हाँ-हाँ' करितहि रहि गेल, मुदा जोतखीकका छान-पगहा तोड़ि अपन गोठुल्लामे दाखिल भ केबाड़ ठोकि लेलैन; यज्ञो सोंटि-सोंटि सपथ खेलैन जे ओहि भोजघरामे पाड़ा मरौ, हम घुरि के किन्नहु ने पैर देब ।

भिनसरे जोतखीककाक आलू सौंसे गाम गरमां देलक । जेम्हरहिं चलथि, एक जूथ छाँड़ा पूबसँ पछौर ध' लैन—'जोतखीकका, आलू ।' त एक जूथ पच्छिमसँ घेर लैन—'कने हमरो ।' हुनका देखितहिँ लोक मान चढ़ा-चढ़ा बाजए लागए—'एहि बेर आलू बड़ सस्त छैक ; आलूक दम बड़ मजगर; हमरा आलूमे दिबाड़ लागि गेल; हमर आलूक खेत.....' आदि, आदि जोतखीकका 'आ'; 'लू' शब्द सुनितहिँ तीन लगगा छड़पि उठथि, कहनिहारक सात पुरखा के अभिनन्दन-पत्र समर्पित करए लागथि । करबीड़क गोर दसेक डंटा छहोछित्त भ गेल तँ भिजाओल बातीक डेढ़हत्थी बनल, मुदा धिआ-पुताक हरहटपनाक समक्ष पार्लियामेन्टो माथा भुका लैछ—ताहू पर हुलकौल धिया-पुता !

बाध दिस बिदा भेलाह तँ बाटमें हुनक भजैता फतुरिआ हजाम कान्ह पर हर नेने चल अबैत रहए, सहानुभूतिक स्वरमे बाजल,—'जोतखीकका, मुनै छी काल्हि भोजमे.....' बेचारा जा हर नीचा करए ता जोतखी कका ओकरा मूँहमे दू इन्च अपन डेढ़हत्थी ठेंगा कोंचि, छाती पर सवार—खो सार आलू, कते खेमे....., बाप, पितामह, परपितामह कहिओ.....।'

ओहि दिन बजारसँ अबैत रही तँ नाह पर जोतखीकका भेटि गेला; कान्ह पर फाटल गमछामे एक दिस मेरचाइ-तैरपात आ 'दोसर छोरमे बान्हल आलू भूर बाटेँ खसल जाइत रहैन, त अनायास मूँहसँ बहरा गेल—'जोतखीकका, आलू खसल जाइत अछि ।' आव लिअ ने, हमरे पर उनटि

गेला—‘अएँ रौ तोहर बाप एखन धरि हमरा सामने.....आ’ तोहर एते ठेसी ! बूढ़ भेल बकरी हूराइसँ ठट्टा ! चारि आखर इ-बी-सी-ही पढ़लैन की ने आ’ कहलकै जे.....कि ने से.....भुसकौल विद्यार्थी के भरि सूप भट्टा ! मलहबा पानि उपछब छोड़ि हुनक फराठी पकड़ि लेलक नहि तँ ढहल कपार अस्पतालक शोभा बढ़बैत ।

फगुआ दिन जोतखीकका ठेहुनक बलें ठाढ़ भ भालि भँजैत, मुँह विभ्रका-विभ्रका फागु गबैत रहथि—‘जोमुना के तट पर, कदमक तरु तर.....’ तावत् कतहुसँ ‘आलू’ शब्द कानमे पड़ि गेलैन ; सौंसे देह जेना लेस देलकैन्ह मुदा विजयाक तरंग पिपनी साहि देने छलैन्ह, देह सकमे नहि रहैन तँ अपस्याँत होइत, लगलाह धूरामे अपन मूड़ी रगड़ए ।

ओहि बेर सिमरिया गेला तँ अही ल’ क’ पण्डासँ कपर-फोड़ी क लेलैन आ’ दड़िभंगामे होटलवलासँ, मधुबनीमे खोचावलासँ बाझि गेलैन । जाहि-जाहि सर-कुटमैतामे पैर देलैन थुककम-फज्जति मचि गेल । पड़ोसक लोक गारिक डरेँ आलूक खेती बन्दे क देलक ।

जोतखीकका मुनकुट बूढ़ भ’ गेला, मुदा हुनक ‘आलू’ तँ विश्वसुन्दरी ‘हेलेन’ क रूप धारण कएकेँ आएल; दोजन युद्ध जेकाँ इहो संग्राम अनवरत चलैत रहल, सुकुर जे अंग-भंगक घटना बहुत थोड़ भेल । आब तँ हुनका निन्नोंमे बाधा पड़ए लगलैन; आँखि मुनाइन की बुझि पड़ैन जेना चारसँ भटा-भटि आलू खसैत अछि कानमे विचित्र प्रकारक स्वर पैस जाइन्ह तँ अध-निन्नेमे फराठी उठा बाहर दिस जोर करथि—‘ठाढ़ रह सार, आइ तोरा हम.....पितिआक सगाइ.....।’

हमरा लोकनि आवहु आलूक तरकारी खाइछी, प्रायः प्रलयकालसँ एक मिनट पहिने धरि खाइत रहब, मुदा ओ स्वाद भेटनिहार नहि । जावत् पृथ्वीपर आलूक लार-चार रहत जोतखीकका मोने रहताह ।

सुनल जे जोतखीककाक सारा पर आलूक गाछ जनमि गेल रहैन, नहि जानि ई कोनो दैवी-चक्र छल वा उकाठी धिया-पुताक करतब !

कुसुम : एक परित्यक्ता

गगनाङ्गन क्रूर हास्य कए रहल छल । बीच-बीचमे दाँत बाहर कए चकित कए दैत छल ओ धरातल पर अवस्थित मानवकेँ । कारी वितान ओढ़ि चलल ओ यात्रो आइ प्रेमपथ पर निर्द्वन्द चलैत प्रेयसीक सर्वनाश करबाक निमित्त । अन्दह, बिहाड़ि आ दे अपना सखाक सङ्ग आक्रमण कएतक ओ ओहि परित्यक्ता विरहिणी पर । ओ छति कुसुम । कुसुम एक दरिद्र पिताक दोना पुत्री छति । रश्मिदीप्त बालुकाक सङ्ग खेला-खेला बितओलक ओ अपन बाल्यावस्था । जखन एहि साँसारिक मायाजालसँ दूर, बहुत दूर छलि तखनहि आवि फँसलि दरिद्रताक कर मध्य ओ । चम-चम चमकैत बिलाड़िक खूर सनसन पाँच सए टाका पओलन्हि कुसुमक पिता, आ बान्हि देल ओहि नवजात बाछोकेँ एक वृद्ध वृषक सङ्ग । जेठको चारु बेटीसँ कम टाका गनओने छलाह एही बेर तेँ चानिएक रुपैया लेब स्वीकार्य भेलन्हि - नोट नहि । कोन विश्वास जाली होइक । पण्डित ने छलाह ।

पेंडूलम जकाँ हिलैत गात, पवनास्पर्शसँ थरथराइत किशलय सम छलन्हि हस्तद्वय ओहि वृद्ध वरक । पाकल आम मामूली सिहकीपर खसि पड़ैछ । अनायास एक दिन एहिक क्रोड़ा समाप्त कए बिदा भेलाह कुसुमक नवपति । आँकड़ फोरलक घैल । कारण भेलन्हि पेटक दर्द । कुसुम, मुग्धा कुसुम ता धरि कुसुमायुधक वाणसँ विधित नहि भेलि छलि । सिद्धान्तक पंडिता छलि ओ जेँ हेतु ओकग अधिकार छलैक । मुदा कार्य क्षेत्रमे कनेयाँ होइतहुँ ओ कन्ये छली । साँप सन ठरल गातक स्पर्श करबाक कहियो साहस नहि कए सकलि ओ । सुरधाम निवासी पतिक साँसारिक क्रिया समाप्त कए कुसुम चलि पुनि अपना नैहर । खेतक खरसी चलल चिकबा घर ।

कुसुम नैहर पहुँचली । कन्नारोहट समाप्त भेल । दूनू माइ-धीमे कुशल-क्षेम भेल । पुनि स्नान भोजनादिक क्रिया सभ सम्पन्न भेल । कुसुमक असमय वैधव्यसँ कुसुमक समस्त परिवार बड़ दुखी छली । 'समय जात नहि लागत बारा' दिन पर दिन बितय लागल एवं क्रमे वर्षक अवधि व्यतीत भय गेल ।

लगवस्सावाली ओहि टोलक माउग मध्य बड़ गिरथाइन । ओ एक दिन कुसुमक
माइक आङ्गन जोरन लेबय अइलीह । स्त्री अओर मधुमाङ्गीमे मसियौतक
सम्बन्ध । एकसरोमे भन-भन । आ' जाइठाम एकसँ विशेष ताइठाम कथे
कोन । लागल गप्प होमए । लगवस्सावाली साँस धरैत बजलीह-कुसुम माए !
कुसुम के दुःख पड़ल आब वर्षो लगलै' आ एखन धरि सिउथो नहि धोआ
देलिऐ । हमरा सासु चारिए मासपर धोआ देने छली ।

जुगुतरानी ! नीक कहैत छी । हमरा लोकनि एहि बेर बारुणीमे गंगास्नान
जाएब । कुसुमोकेँ जाए दियौक । अन्न-पानि त हम सभ लैये जाएब तखन
किछु टका कैआ संग कए देबैक । ओहो हमरहि सभक सङ्ग चलि आओत ।
आजुक पनरहमे जाएब ।

“वेश बहिनदाइ ई जएह कहथिन्ह सएह हैतै’ कहि कुसुम माए हुनका जोड़न
दए देलथिन्ह आ’ जोर लागि विदा कए देलथिन्ह । ई बात दुम्भलन्हि
कुसुमक पिता । कोढ़िया चाहए हौ ओ बुभलन्हि कमे खर्च-बर्चमे काज चलि
जायत । हुनका ई बात स्वीकार भए गेलन्हि ।

दुहवी महिनाथपुर लगक टीसन । ओहीठामसँ सभ चलल गङ्गास्नान । गोर
पन्द्रहेक कफला छल । पुरुषपातमे एक छलाह अदिति आ’ दोसर छल दुनाइ
खवास । अओर सभ स्त्रिगणे । अदिति चतुर्थ वर्ष अङ्गरेजी आनर्सक छात्र
छलाह । अङ्गरेजी सभ्यतामे पूर्णतः माँजल । सीट-साटमे वेश इसखी । रङ्गो
रूप तेहने । पुष्ट कल्ला, विस्तृत ललाट, नाक अनमन लाइफटाइम सेकर्स,
पैच-पैच आँखि पाँच हाथक मर्द । रूप गुण सभसँ सम्पन्न एक अविवाहित
युवक । माए कहथिन्ह—अदिति, विवाह कऽ ले । सभक आङ्गन पुतहु ऐलै’ आ
हमरा बेटा रहितहुँ आङ्गन सुन्न अइ ।

त अदिति कहथिन्ह—माए ! एखन विवाह करब कोनो आवश्यक थोड़े
अछि । पहिने हमरा एम० ए० पास होअऽ दे तखन तोरा मनजोगर छम-छम
करैत पुतहु आनि देबौ, मुदा देखिहेँ पुतहु मारौक नहि ।

आदितिक माए विहुसि कहथिन्ह—जाह तो सभ दिन बताहे रहबह ।

आ पुनि अपना कार्यमे तल्लीन भए जाथि । ई छलाह अदिति लगवस्सा-
वालीक बहिनपूत ।

सुमधुर परांगयुक्त पुष्पक स्निग्धतापर ककर मोन मोहित नहि भए जाइछ ।
 कुसुमक लावण्यपर अदिति सहजहि मोहित भए गेलाह । दुइए दिनक सहवाससँ
 अदिति कुसुमसँ पूर्णतः आकृष्ट भए गेलाह । कुसुम, सतत लज्जावनत मुग्ध
 कुसुमक सौन्दर्यक अवलोकन करबामे अदितिकेँ अभिनव आनन्द होमए
 लगलन्हि । प्रेमी हृदय सहजहि प्रकट भए जाइछ । एक ट्रेन 'मिस' कए अदिति
 सभकेँ सिनेमा लए गेलाह । "सुबह का तारा" हिन्दी पिकचर देखलन्हि ।
 नायिकाक अभिनायकक पश्चात् कुसुमक हृदयमे उएह भाव जाग्रत भेलन्हि ।
 अदितितँ पूर्व जागृते छलाह । दूनू व्यक्तिक हृदयमे गुप्त - प्रेमक वास भए गेल
 दूनू एक दोसराकेँ आँखि बचाकऽ देखल करथि । जाहिठाम किछु समय पूर्व
 कोनो रुकावट नहि छल तहीठाम आव गुप्त कामभावनाक यवनिका ठाढ़ भए
 गेल । प्रेमक सम्मोहनसँ दूनू व्यक्ति समीप आवय लगलाह ।

धुरती गाड़ीमे समस्तीपुरमे मेल नहि छलैक । ओहिठाम उतरि तीन घंटा तक
 अँटकए पड़लन्हि । सभक विचार भेलैक जे अहीठाम सभ सौदावारी कए
 लो । बेरावारी सभ बाजार चलल । सभसँ अन्तमे कुसुम एकसरिए चललि ।
 लगवस्सावाली अदितिकेँ कुसुमक सङ्ग कए देलथिन्ह जे समर्थ-समर्थ बेटी
 रातिमे एकसरे बाजार कोना जाएत । अदितियो प्रेम-प्रदर्शनक सुअवसरकेँ
 अपना हाथसँ नहि जाय देबए चाहलन्हि । ओहो विदा भेलाह । एही
 लघुयात्राक मध्य दूनू व्यक्तिक बीच जे लज्जाक व्यवधान छल से विलीन भऽ
 गेल । दूनू गोटे आइसँ दू शरीर एक आत्मा भए गेलाह । सौदावारी कए सभ-
 गोटे गाम चललाह । अदिति एहि बेर एतए पचीस दिन धरि रहलाह । तकरा
 बाद गामसँ तार आबि गेलन्हि, ओ चल गेला । दू मासक बाद जखन
 कुसुमकेँ बुझना गेलन्हि त ओ अदितिकेँ एहि प्रकारेँ पत्र लिखलथिन्ह—
 अदिति बाबू !

हमर अहाँक प्रेम प्रबल भेल । हमरा लोकनि ओकरा गुप्त राखए चाहलहुँ । मुदा
 ईश्वरेच्छा ओ प्रेम किछु मासक बाद मूर्ति रूपमे प्रगट होएत । —कुसुम

अदितिकेँ कुसुम अदिति कइथिन्ह जे हेतु सिद्धान्ततः विवाह नहि भेल
 कलन्हि । पत्र पबतहि अदिति सन्न भए गेलाह । सद्भावना कहैन्ह - अदिति !

अहाँमँ ओकरा पवित्र प्रेम छैक । अहाँ परित्याग नहि करियौक । मुदा जखन समाज दिस ताकथि त कर्णगोचर होइन्हि अदिति ! तो विधवासँ विवाह करब ? दुष्कर्मी होएबह ? हमरा सभ तोहरा छाड़ि देबह । बायकोट (boycott) कए लेब हमरालोकनि तोरासँ । पिता दिस ध्यान जान्हि त चित्कार कए उठथि—बाप रे बाप ! एतेक क्रूर ! भगवान.....न ! अपन मन समाजक प्रति घृणासँ भरि जाइन्हि । अदिति नहि छलाह । पत्र टेबुले पर छल । हुनक पिता पढ़लन्हि । ओ अदितिकें बड़ बनओलथिन्ह । अन्तमे ओ देवानजीसँ एक पत्र लिखबओलन्हि जाहिपर सुगुप्तावस्थामे अदितिसँ हस्ताक्षर करा कुसुमकेँ प्रठा देलथिन्ह । पत्र एना छल :

कुसुम !

तों कामुक छली हमरा शरणमे अइलीह । हम ओकर पूर्ति कएल । प्रेम नहि । लिप्सापूर्ति प्रेम नहि थीक ।

—अदिति

पत्र देखितहि कुसुमक आगाँ घोर अन्धकार भए गेलैक । आत्मा हाहाकार कए उठलैक-पापी ! छली ! आब हमर कोन उपाय । पुनि धैर्य धारण कए चलली कुसुम अदितिक ओतए शरण - याचनाक हेतु । नौड़िन बनबाक हेतु । जाइते छलि-अन्हर, पानि, विहारि पाथर ओकरा बाट भुतिया देलकैक । अद्यावधि ओ पतिता भए संसारक संकीर्ण पथक विस्तृत बन्धारीक माला भए यत्र-तत्र येन केन प्रकारेण समय व्यतीत कए रहलि अछि । भुतआएल फिरैत अछि । कतहुँ इजोत नहि । सभदिन अमा ।

प्रत्येक पाठककेँ हमर कुसुमसँ भेंट भेल होएतन्हि । केयो बाट देखा देखुन्ह पूनम चन्द्र बनि ।

अगहन

श्रीरामसेवकठाकुर 'सेवक'

किए रहब आब उदास

पुनि आएल अगहन मास ।

जखन कातिक बड़ सताओल

लुधा-डण्टा कृश बनाओल

अस्थि मात्रहिटा बचाओल

दिबस गनि गनि से बिताओल

भेलै ओहि के नाश

किए रहब आब उदास ॥१॥

जखन अन्नक लेल घर घर

दीनता देखवैत थर थर

करी स्वामीक सोभ कर कर

कहए पुनि ओ तखन घर घर

सुनि मेटए सब प्यास

किए रहब आब उदास ॥२॥

आइ सब केर छै भरल घर

किओ न ककरो सँ कनेक डर

धीया पूता करए बर बर

खाए मुरही, लाइ, भटवर

सब भरल नव उल्लास

किए रहब आब उदास ॥३॥

देखू आइ सब घर आँगन

नीपल पोतल परम पावन

कतौ नहि आइ कीच सावन

नहि प्रचण्ड रवि ग्रीष्म कीरण

अछि स्वच्छ बन, आकाश ।

किए रहब आब उदास ॥४॥

प्रकृतिक विवेचन

श्रीशरणजी

प्रकृति चुप छथि कियेक से बहु संयमक अभिशाप लै लै।
आ कि सम्भव मातृ ममता राखि पुत्रक शाप लै लै ॥
जौं कही उत्तर ने भेटलन्हि पवन सौं भाषण करवियौन्ह ।
लता काँपति छथि कियेक से लतागणसँ जाये पुछियौन्ह ॥
अधखिलति कोमल कली सं अहाँ किछु मुसुकाय पुछियौन्ह ।
उदधि सँ काँ जायेब बूझब नदीगणसँ न्याये पुछियौन्ह ॥
अमर ने वेधति कमल छथि कियेक से हर्षाये पुछियौन्ह ।
कियेक पतझड़ पावि कोयल काल काटथि ताप लै लै ॥प्रकृति॥
पवन सौं स्पर्शि वनितक सनसनाहट देखलहुँ ने ।
कमल कलि कोमल कपोलक थपथपाहट देखलहुँ ने ।
नवल शत शत पत्र नेत्रक डबडबाहट देखलहुँ ने ।
पुनः एक मुहुर्त भरि मे खिलखिलाहट देखलहुँ ने ।
प्रात ऊषा साँझ चन्द्रिक मुस्कराहट देखलहुँ ने ।
की करव ई बूझि व्याकुल व्यर्थ पश्चात्ताप कै कै । प्रकृति० ॥

भगवान ओ विज्ञान

श्रीराजमोहनभा

पंडितजी कहने रहथिन्ह,
पोखरि पर जँ यज्ञ हैत,
हजार टा
महादेवक पूजा कैल जैत,
पानि वरसत अवश्य ।

भेल यज्ञ, हजार टा—
महादेव पूजल गेलाह,
आ' नभ कारी-कारी मेघ खण्ड सँ
भडरि गेल'
परन्तु उठल पछवा बसात,
सभ मेघ कै कऽ तितिर-बितिर,
उड़बैत, दौड़बैत, खेहाड़ैत,

क्षितिज क ओहि पार कऽ भंगा देलक ।
लोकक हरिआयल मन पर
कालिमा पसरि गेल ।

ओहि दिन घटाटोप उमड़ि आयल,
पड़ऽ लगल मटर सन सन बुन्नी,
लऽ कऽ इनार सँ पोखरि-डाबरि
तक भडरि गेल,
खेत मे, लोकक मुँह पर—
सवेत्र हरियरी दौड़ि गेल ।
मऽन पड़लैक तखन ककरो:
काल्ह रेडियो मे बाजल रहैक,
पानि खूब काल्ह वरसत ।

डाक पीन

श्रीअग्रदूत

खाकी रंगक
कोट पेन्ट
चेरुड़ी लागल
आ' ढील-ढाल
अतिशय फल्लड़ ।
पदत्राण मुगल चप्पल
एंडी स डेढ़ इंच
निकलल बाहर ।
दए गेल सभक
लीखल समाद
सबहक चिट्ठी ।
संगी के छनि
भौजिक हाथक—
'छोटका बाबू,
बेटी भेल ।
की भेल ने हमरे
बात सत्य ?
अछि हृष्ट-पुष्ट,
अछि गोरि-नारि,
बस बुझू जेहन
होबक चाही ।'
संगी अतिशय
प्रमुदित मन सँ
केलैन एलान
देथिन पार्टी
'पिन्टू' मे वा 'बालाजू' मे ।
आ यारक छनि
मिथिलाक्षर मे
पिक्तिक हाथक—
एक पोस्टकार्ड—

'चिरंजीवी बौआ,
शुभाशीष ।
आगाँ कलहुका
भोरुक पहर
बड़का भैया
भए गेला शांत ।
चिट्ठी पवैत
चल आब गाम ।
सब हाल एतहि
अएनहिँ बूझव ।
से यार कनै छथि
ठोहि पारि ।
अपना तकिया मे
मूंह गारि ।
छथि बहा रहल
अपना हृदयक
ओ पितृ-स्नेह ।
आ' हमरहु अछि
मोरल मोरल
एकटा अन्तर - देशीय पत्र ।
लिखलनि अछि
बच्चाक माय—
'दुर जाउ !
वेहन पाथर छी
खसलै जाड़ आब ।
खद्वर के ओ
पुरना आँगी
चोरी - बाती
भए फाटि गेल ।
आगि तापि

क क केलाह
हो, जगि कोमलुमा
काहि लेह ।
आ विम दुपहरिया
खडू कोमा
अहमा आँगम से
लेखन साज ?
बबा के से
कुसी नै छनि ।
छधि कंक-कंक,
आ तइ पर स
सदी अयाध ।
तेकरे टोरे
सब राति जखन
क ज्वर होइ छनि
त कानि-कानि
बाजए लगती—
'हम्मल बाबू,
आइये अउता,

कुलना, निजकुन
नेने अउता,
से एक होता
ने देखी लोका.....
अइस आगू
नहि पदि सकलहुँ
आखिक आगू
भए गेल अन्हार ।
आ डाक पीन
मिस्टर शुक्त के
दइत छलान
दू सौ टाका
आ अकट्टवर के
खर्च हतु"
लीखल कूपन ।
भए निर्विकार,
स्थितप्रज्ञ,
निर्लिप्त सभक
दए गेल पत्र ।

ओभा

श्रीकालीनाथभा

भारत भूमिक पूत कमासुत,
देल जखन ललकारा ।
तखन ब्रिटेन क बुढ़िया भागलि,
टूटल हमरो कारा ॥
पाचि पाचि क रखने छल ओ
शोणित भरि - भरि डोका ।
एखनहुँ धरि अछि सभक गात मे
कनेक मनेक ओ कोका ॥
बाबा गान्धी भाड़ि बचाओल
बरुचा प्राणी जीवन ।
तेँ छी देखइत एतबो एतबी;
जागल जनता जीवन ॥

भारत माता कोर वैसिके
मन भरि एक रसगुल्ला ।
खयलहुँ आओर खुओलहुँ पाहुन
हटलै हल्ला गुल्ला ॥
हमरो भारत अछि महिमामय
आँचर एकरे मिथिला ।
जकर विचार जगत भरि पसरल
सएह एखन अछि शिथिला ॥
जनगण तन्त्र मन्त्र हम सीखल
आभा बनलहुँ अपनहि ।
आइ साँझ खन सोचि रहल ओ,
वातकते हम सपनाइ ॥

आलोचना-प्रत्यालोचना

सकल साहित्य प्रेमीकेँ ग्रन्थक सूक्ष्ममर्मसँ परिचित करएबाक एक सुन्दर उपाय आलोचना-प्रत्यालोचना थिक जँ ओ नीतिपूर्वक निष्पन्न तथा सुयोग्य व्यक्ति द्वारा साहित्यक विकास भावनासँ लिखित हो तँ हम एहि स्तम्भक स्वागत करैत छी । किन्तु आलोचक के बनथि तकरो विवेक राखब अत्यन्त आवश्यक अन्यथा विपरीते असर पड़बामे वातावरण आवि जाय ! एखन धरि 'वैदेही'मे जे आलोचना प्रकाशित भेल अछि से अनुचित ढङ्गसँ आलोचक कोनो बातक क्रोध राखि जेना आग्रहसँ दोषकेँ गढ़ि कटुशब्देँ उपस्थित भेल होथि । एहि रीतिसँ सुधार नहि उधारहिक सम्भव । 'वैदेही'क अप्रैल (१९५७)क अङ्कमे एक महाशय 'सत्यप्रियम्' एहि अशुद्ध उपनामसँ कतोक लेखपर कटु आलोचना कएलैन्ह अछि । हमरा 'अयाचीक शंकर' देखल अछि । अतः ओहि प्रसङ्ग किछु प्रत्यालोचना लिखबहम एहि लेल आवश्यक बुझैत छी जे ओ एकाङ्की मिथिलाक सांस्कृतिक उत्कर्ष सूचक रोचक ढङ्गसँ नाटकीय मर्यादाकेँ रखैत लिखल गेल अछि । ओकर लेखक थिकाह साहित्यक ख्यातिप्राप्त विद्वान अनेक काव्य-निर्माता—महाकाव्य-लेखक—एक प्राचीन अध्यापक तनिका उपर विना प्रमाण आक्षेप सेहो अनुचित शब्दसँ असभ्यता थिक । आलोचक केहेन छथि जनिका 'अऐतिहासिक' एहि शब्दहुमे अशुद्धताक ज्ञान नहि तथा अपन उपनामे 'सत्यप्रियम्' एहन अशुद्ध प्रयोग करबामे प्रत्यालोचनाक भय नहि । अस्तु, सत्यप्रियजी 'अयाचीक शंकर'केँ अनाटकीय रचना कहि ओकर प्रमाणमे जे युक्ति देलैन्ह अछि ताहिसँ की सिद्ध होइछ ? देखल जाओ ओ कहैत छथि 'खाली कोनो वस्तुकेँ कथोपकथनमे लिखि देने त नाटक नहि भऽ जाइछ ।' एकर उत्तर जे नाटकमे कथोपकथनमे प्राण रहैछ जँ ओ औचित्यपूर्ण रहए की विना कथोपकथनहुसँ नाटक होइत छैक ? दोसर आक्षेप छैन्ह जे 'एकर घटनाक्रम पूर्णतः असंबद्ध अछि ।' एहि प्रसङ्ग कहब आवश्यक जे कोन कारणसँ कोन घटनाक्रम असंबद्ध छैक तकर उपादान तँ आवश्यक छल की विना प्रमाणहि सत्यप्रियजीक आदेशहिपर पाठक मानि जएताह ? से समय चल गेलैक । तेसर बात छैन्ह 'दलबन्दीक चर्चा अऐतिहासिक बना दैछ' एहि कथनपर तँ हँसी लगैछ की नाटकमे दलबन्दीक चर्चा नहि होइत छैक ? वा जनश्रुतिक आधारपर प्राचीन इतिहास आधारित नहि छैक ? नाटकमे रोचकता कल्पनिको घटना जोड़बाक की प्रथा नहि छैक ? तखन अनाटकीयता कोना ? अन्तिम हेत्वाभास छैन्ह प्रस्तावना देबासँ सत्यप्रियजीक विचारेँ प्रस्तावना देलासँ ओहिमे नाटकीयता नहि रहि सकैछ जँ ई कहितथि जे ओहिमे आधुनिकता नहि रहैछ त

एक तरहक बात होइतन्हि किन्तु जे अत्यावश्यक मानल गेल छैक तकर अस्तित्वसँ एतेक पैघ अपराध भय गेलैक जाहिसँ ओहिमे अनाटकीयता धर्म बाबि गेलैक ? बाह रे तर्क !!! बाह रे समालोचना !!! की एहने-एहने समालोचनासँ मैथिलीक प्रगति सम्भव ?

—श्रीकृष्णमिश्र, व्या० आ०, जनकपुरधाम

मार्च मासक 'पाठकक पृष्ठ'क अन्तर्गत श्रीगंगानाथभाक लिखल 'एक समस्या' शीर्षकविचारोत्तेजक लेख पढ़ि हम एहि पंक्ति लिखबामे विवश भेल छी । ने तँ हम लेखक छी आओर ने हमरा मैथिलीक लेखक लोकनिसँ कोनो प्रकारक सौहार्द । किन्तु मैथिली-भाषा-प्रेमी अवश्य छी ओ यथासंभव मैथिली-साहित्यक अध्ययन करैत रहैत छी । श्रीगंगानाथजी श्रीअमरजीक जाहि निबंधक विषयमे लिखने छथि से हमहूँ पढ़ल अछि । ई निस्सन्देह जे अमरजीक एक दिसाह भए गेल छन्हि । हमरा तँ ओकरा पढ़ितहि आश्चर्य भेल जे कोन विचारसँ आलोचना-विभागक अध्यक्ष ओकरा चुनि कए अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलनक रचना - संग्रहमे संकलित कराओल । हमरा अमरजी क्षमा करताह । जाहि विषयपर ओ कलम चलौनेछथि तकर पूर्ण ज्ञान नहि छन्हि । मैथिली साहित्यक एकांकीक ऐतिहासिक रूप-रेखा ओहिमे ओ प्रस्तुत कएने छथि किन्तु हुनका एकर ज्ञान नहि छन्हि जे एकांकी ककरा कहैत छैक । कारण 'एकांकी-चयनिका'क आलोचना करैत ओहिमे ओ लिखलन्हि अछि जे 'एकांकी-चयनिका' मे संकलित एकांकी नहि, प्रहसन थीक । हुनका एकर ज्ञान आवश्यक होएतन्हि जे रूपकक रचना प्रहसन संगहि संग एकांकी भए सकैत छैक एवं प्रहसनक एक शास्त्रीय लक्षण एकांकी होएब थीक । ओहि लेखमे जे सैद्धान्तिक स्थापन कएल गेल छैक से सभ अप्रौढ़ । ई विस्तृत चर्चाक विषय थीक । ओहि निबंधमे 'एकांकी-चयनिका'क एतेक निन्दा कएल गेलैक अछि से हुनक असंतुलित मष्तिष्कक परिचायक थीक । ओहि मे एक दिसाह विचार भेटत, आँखि मूनि प्रशंसा वा आँखि मूनि निन्दा । की एकरे आलोचना कहैत छैक ? हम लेखक नहि छी, अधिकारी विद्वान अवश्य एहि पर प्रकाश देताह ।

अन्तमे अमरजीसँ हमरा साग्रह निवेदन जे महत्वाकांक्षाक कारण एहन कार्य नहि करथि जाहिसँ साहित्यक सेवाक विपरीत साहित्यक हानि हो । ओ कवि छथि; विशेष हास्य-रसक कवि । अपन कवित्व शक्तिक विकास करथु ओ वैद क्षेत्रमे हुनक नाम होएतन्हि । कविक आलोचक रूप अगतिक सूचक होइछ । श्रीगंगानाथभाजीकेँ हम हार्दिक धन्यवाद दैत छियैन्ह जे ओ एहन महत्वपूर्ण विषय दिस हमरा लोकनिक ध्यान आकर्षित कराओल अछि ।

—श्रीवैद्यनाथठाकुर, गोरई

मैथिलीक कथा-साहित्य

१. नवतुरिया	१)	२१. प्रतिमा	॥१)
२. गरीबक बखारी	॥=)	२२. बिडम्बना	१॥)
३. चारि आना कैञ्चा	१)	२३. भलमानुस	२॥)
४. सप्तसुमन	१॥)	२४. मिथिलाभाषाकिस्सासंग्रह	॥१)
५. छीक	॥=)	२५. रेखाचित्र	२)
६. गप्पक फोड़न !	१)	२६. विकास (पाँच चिट्ठी)	॥)
७. गल्पाञ्जलि (द्वि० सं०)	१॥)	२७. बीरकन्या	॥)
८. चयनिका	१॥॥)	२८. बेकफिल्डक पादरी	३)
९. लालभौजी	॥=)	२९. ससरफानी	२)
१०. सञ्चयिता	१)	३०. दृष्टिकोण	१॥)
११. अश्रुकण	१)	३१. सीतादाइ	१॥)
१२. आमक जलखरी	२)	३२. त्रिफला	॥=)
१३. उदयनकथा	१॥)	३३. कन्यादान	१॥॥)
१४. उपहार	॥)	३४. खट्टरककाक तरंग (दूनु भाग)	४)
१५. कला	१)	३५. द्विरागमन	२॥)
१६. खिस्सापिहानी	१)	३६. प्रणम्यदेवता	३)
१७. नरोत्तमकथा	१॥)	३७. रङ्गशाला	२)
१८. निर्मला	॥=)	३८. फलेना जामुन	१)
१९. पारो	१॥)	३९. हितोपदेश-सार	॥॥=)
२०. प्रतिबिम्ब	१॥)	४०. शिकार	१)

मैथिलीक उच्चकोटिक प्रकाशन

१. मैथिली साहित्यक इतिहास	५)	१०. कृष्णजन्म	१॥)
२. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता- (दूनु भाग)	२)	११. एकावली परिणय	४)
३. विवेचना	१)	१२. चित्रा	२)
४. अम्ब-चरित	२)	१३. आत्ममर्यादा	॥)
५. मिथिलाभाषा प्रकाश	२)	१४. गीति-माला	॥=)
६. विद्यापति (खगेन्द्रनाथ- मजुमदार)	१५)	१५. रागत रंगिणी	६)
७. मैथिली-गीति-रत्नावली	१॥)	१६. रावणवध-महाकाव्य	१॥)
८. मिथिला रामायण	५)	१७. रचना-संग्रह (प्रथम भाग)	५)
९. मैथिली रामायण	२॥)	१८. परिचय-पात	१॥)
		१९. सम्मेलन-साहित्य-समीक्षा	२)
		२०. मैथिली कुसुमाञ्जलि	१॥)

विना अग्रिम एडवान्सकेँ वो० पी० पी० नहि जाइछ ।

प्राप्ति-स्थान : मन्त्री, वैदेही समिति, लालबाग, दरभंगा ।